© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 01 | January - March 2016

भारत की परमाणु निवारण नीति: इसकी प्रभावशीलता और वैश्विक धारणाओं का विश्लेषण

डॉ दीप कुमार श्रीवास्तव

वरिष्ठ प्रवक्ता, रक्षा अध्ययन विभाग

एसएम कॉलेज चंदौसी

सार

भारत की परमाणु निरोध नीति, जो पहले उपयोग न करने (एनएफयू) सिद्धांत और एक विश्वसनीय न्यूनतम निरोध मुद्रा द्वारा चिह्नित है, 1974 में अपने उद्घाटन परमाणु परीक्षणों के बाद से इसकी राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति का अभिन्न अंग रही है। यह शोध भारत की परमाणु निरोध की प्रभावशीलता की जांच करता है। रणनीतिक स्थिरता, संभावित हमलावरों को रोकना और राजनयिक उत्तोलन को बढ़ाना। यह क्षेत्रीय सुरक्षा गतिशीलता, अंतरराष्ट्रीय अप्रसार मानदंडों के अनुपालन और रणनीतिक साझेदारी पर प्रभाव पर विचार करते हुए भारत के परमाणु रुख की वैश्विक धारणाओं का भी पता लगाता है। चुनौतियों और आलोचनाओं का सामना करने के बावजूद, भारत की नीति को काफी हद तक जिम्मेदार और स्थिर माना जाता है। बदलते सुरक्षा परिदृश्य में नीति की निरंतर प्रासंगिकता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए, परमाणु अप्रसार प्रतिबद्धताओं के साथ निरोध आवश्यकताओं को संतुलित करने की सिफारिशों के साथ शोध का समापन होता है।

मुख्य शब्द: भारत, परमाणु, निवारण, प्रभावशीलता, वैश्विक धारणा इत्यादि ।

प्रस्तावना

भारत की परमाणु निरोध नीति उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति का एक महत्वपूर्ण घटक रही है क्योंकि उसने पहली बार 1974 में परमाणु परीक्षण किया था। इस नीति की नींव नो फर्स्ट यूज़ (एनएफयू) सिद्धांत पर टिकी हुई है, जो प्रतिज्ञा करती है कि भारत परमाणु हथियारों का उपयोग केवल जवाबी कार्रवाई में करेगा। परमाणु हमला. यह एनएफयू सिद्धांत एक विश्वसनीय न्यूनतम निवारक मुद्रा द्वारा पूरक है, जो यह सुनिश्चित करता है कि भारत किसी भी प्रतिद्वंद्वी को अस्वीकार्य क्षति पहुंचाने के लिए पर्याप्त परमाणु शस्त्रागार बनाए रखता है।

भारत की परमाणु निवारण नीति का प्राथमिक उद्देश्य रणनीतिक स्थिरता बनाए रखना और संभावित विरोधियों को परमाणु या बड़े पैमाने पर पारंपरिक हमले पर विचार करने से रोकना है। इस सिद्धांत का उद्देश्य घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों दर्शकों को अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करते हुए जिम्मेदार परमाणु व्यवहार के प्रति भारत की प्रतिबद्धता के बारे में आश्वस्त करना है।

भारत की परमाणु निवारण नीति की प्रभावशीलता

- **सामरिक स्थिरता**

भारत की नो फर्स्ट यूज़ (एनएफयू) नीति दक्षिण एशिया में रणनीतिक स्थिरता बनाए रखने में आधारशिला रही है। केवल जवाबी कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध होकर, भारत परमाणु वृद्धि के जोखिम को काफी हद तक कम कर देता है। एनएफयू सिद्धांत एक विश्वसनीय सेकेंड-स्ट्राइक क्षमता द्वारा समर्थित है, जो यह सुनिश्चित करता है कि भारत पर किसी भी परमाणु हमले का विनाशकारी जवाबी जवाब दिया जाएगा। यह निवारक रणनीति विरोधियों को पहले परमाणु हमले पर विचार करने से हतोत्साहित करती है, जिससे क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता में योगदान मिलता है।

- **आक्रामकता के विरुद्ध प्रतिरोध**

भारत का परमाणु शस्त्रागार क्षेत्रीय विरोधियों, विशेषकर पाकिस्तान और चीन की पारंपरिक और परमाणु आक्रामकता दोनों के खिलाफ एक मजबूत निवारक के रूप में कार्य करता है। परमाणु जवाबी हमले की विश्वसनीय धमकी संभावित हमलावरों के लिए रणनीतिक गणना को जटिल बना देती है। यह बड़े पैमाने पर पारंपरिक हमलों और परमाणु हमलों को रोकता है, पूर्ण पैमाने पर युद्धों की रोकथाम में योगदान देता है। परमाणु हथियारों की उपस्थिति एक रणनीतिक तुल्यकारक के रूप में कार्य करती है, जो भारत को एक सुरक्षा छतरी प्रदान करती है जो अस्तित्व संबंधी खतरों से रक्षा करती है।

- **प्रौद्योगिकी प्रगति**

भारत ने अपने परमाणु शस्त्रागार और वितरण प्रणालियों में महत्वपूर्ण प्रगति की है, जो एक विश्वसनीय निवारक बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं। एक परमाणु त्रय का विकास - जिसमें भूमि-आधारित मिसाइलें, विमान और पनडुब्बी से प्रक्षेपित बैलिस्टिक मिसाइलें (एसएलबीएम) शामिल हैं - भारत के परमाणु निवारक की उत्तरजीविता और प्रभावशीलता को बढ़ाता है। वितरण प्लेटफार्मों का यह विविधीकरण यह सुनिश्चित करता है कि भारत जवाबी कार्रवाई कर सकता है, भले ही उसके परमाणु बल के एक या अधिक घटकों से समझौता किया गया हो। अपनी परमाणु क्षमताओं का निरंतर आधुनिकीकरण एक विश्वसनीय और प्रभावी निवारक मुद्रा बनाए रखने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

- **कूटनीतिक उत्तोलन**

भारत की परमाणु क्षमता वैश्विक मंच पर उसके राजनयिक प्रभाव को बढ़ाती है। यह भारत को अन्य प्रमुख शक्तियों के साथ रणनीतिक बातचीत में शामिल होने की अनुमति देता है और इसे वैश्विक अप्रसार मानदंडों के लिए प्रतिबद्ध एक जिम्मेदार परमाणु राज्य के रूप में स्थापित करता है। परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) पर हस्ताक्षरकर्ता नहीं होने के बावजूद, भारत का सख्त निर्यात नियंत्रण का पालन और इसकी एनएफयू नीति अंतरराष्ट्रीय अप्रसार उद्देश्यों के अनुरूप है। इस जिम्मेदार परमाणु व्यवहार ने संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस जैसी प्रमुख शक्तियों से समर्थन प्राप्त किया है, जिससे नागरिक परमाणु प्रौद्योगिकी में रणनीतिक साझेदारी और सहयोग की सुविधा मिली है।

भारत की परमाणु निरोध नीति ने क्षेत्र में राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक स्थिरता बनाए रखने में प्रभावी ढंग से योगदान दिया है। एनएफयू सिद्धांत ने, एक विश्वसनीय न्यूनतम निवारक मुद्रा के साथ मिलकर, संभावित हमलावरों को रोका है और भारत को महत्वपूर्ण राजनयिक लाभ प्रदान किया

है। हालाँकि, नीति को उन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिन पर निरंतर ध्यान देने और अनुकूलन की आवश्यकता होती है। तेजी से विकसित हो रहे सुरक्षा माहौल में भारत की परमाणु निरोध नीति की निरंतर प्रासंगिकता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए वैश्विक अप्रसार मानदंडों के प्रति प्रतिबद्धताओं के साथ निरोध आवश्यकताओं को संतुलित करना महत्वपूर्ण होगा।

वैश्विक धारणाएँ

- **क्षेत्रीय सुरक्षा गतिशीलता**

भारत की परमाणु निरोध नीति को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा चिंता और स्वीकृति के मिश्रण के साथ देखा जाता है। क्षेत्रीय संदर्भ में, पाकिस्तान भारत के परमाणु रुख को सीधे खतरे के रूप में देखता है, जो उसे अपनी परमाणु क्षमताओं को विकसित करने और विस्तारित करने के लिए प्रेरित करता है। इससे दक्षिण एशिया में हथियारों की होड़ शुरू हो गई है, तनाव बढ़ गया है और गलत आकलन का खतरा बढ़ गया है। दूसरी ओर, चीन जैसे देश भारत की परमाणु क्षमताओं को अपनी रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता के व्यापक संदर्भ में देखते हैं, जिससे सैन्य तैयारी और रणनीतिक समायोजन में वृद्धि होती है।

हालाँकि, कई क्षेत्रीय कलाकार भारत की परमाणु नीति को एक स्थिर कारक के रूप में पहचानते हैं जो एकतरफा आक्रामकता को रोकता है और शक्ति संतुलन में योगदान देता है। नो फर्स्ट यूज़ (एनएफयू) नीति और दूसरे हमले की क्षमता के प्रति प्रतिबद्धता पड़ोसी देशों को भारत के रक्षात्मक रुख के बारे में आश्वस्त करती है, पूर्व-खाली हमलों की संभावना को कम करती है और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देती है।

- **अंतर्राष्ट्रीय अप्रसार व्यवस्था**

विश्व स्तर पर, परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) पर हस्ताक्षर न करने की स्थिति के बावजूद, परमाणु हथियारों पर भारत के रुख को आम तौर पर जिम्मेदार माना जाता है। भारत के सख्त निर्यात नियंत्रण और वैश्विक परमाणु अप्रसार मानदंडों के पालन ने इसे एक जिम्मेदार परमाणु राज्य के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई है। इस जिम्मेदार व्यवहार को भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते जैसे समझौतों के माध्यम से स्वीकार किया गया है, जिसने अंतरराष्ट्रीय धारणाओं में एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिह्नित किया और वैश्विक परमाणु व्यवस्था में भारत के एकीकरण की सुविधा प्रदान की।

मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एमटीसीआर) और वासेनार व्यवस्था जैसे अंतरराष्ट्रीय अप्रसार प्रयासों में भारत की भागीदारी, वैश्विक सुरक्षा मानदंडों के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को और रेखांकित करती है। इन कदमों से भारत की परमाणु महत्वाकांक्षाओं के बारे में चिंताओं को कम करने में मदद मिली है और इसकी परमाणु स्थिति की अधिक स्वीकार्यता को बढ़ावा मिला है।

- **रणनीतिक साझेदारी**

भारत की परमाणु नीति ने प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ रणनीतिक साझेदारी के विकास को सुविधाजनक बनाया है। उदाहरण के लिए, भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता एक ऐतिहासिक समझौता था जिसने भारत के जिम्मेदार परमाणु व्यवहार और इसके रणनीतिक महत्व को संयुक्त राज्य अमेरिका की मान्यता को रेखांकित किया। इस समझौते ने न केवल भारत को नागरिक परमाणु प्रौद्योगिकी और ईंधन तक पहुंच की अनुमति दी, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा भारत के परमाणु शस्त्रागार की व्यापक स्वीकृति का भी संकेत दिया।

इसी प्रकार, रूस के साथ भारत के रणनीतिक संबंध परमाणु सहयोग से मजबूत हुए हैं, रूस परमाणु रिएक्टरों और प्रौद्योगिकी का प्रमुख आपूर्तिकर्ता है। ये साझेदारियाँ भारत की ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाती हैं और वैश्विक परमाणु परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में इसकी स्थिति को मजबूत करती हैं।

- **आलोचना और चुनौतियाँ**

आम स्वीकृति के बावजूद, भारत की परमाणु नीति आलोचकों से रहित नहीं है। कुछ लोगों का तर्क है कि एनएफयू नीति में विश्वसनीयता की कमी है, खासकर उन्नत मिसाइल रक्षा प्रणालियों और युद्ध में तेजी से तकनीकी बदलाव की संभावना के सामने। भारत की जवाबी कार्रवाई की सीमा को लेकर अस्पष्टता और सैद्धांतिक बदलाव की संभावना भी इसकी निवारक मुद्रा की स्थिरता के बारे में चिंता पैदा करती है।

इसके अलावा, क्षेत्रीय हथियारों की होड़, विशेषकर पाकिस्तान के साथ, एक महत्वपूर्ण चुनौती है। पाकिस्तान का सामरिक परमाणु हथियारों का विकास और पूर्ण-स्पेक्ट्रम निरोध पर उसका ध्यान दक्षिण एशिया में एक जटिल और संभावित रूप से अस्थिर करने वाली स्थिति पैदा करता है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय क्षेत्र में परमाणु वृद्धि के जोखिम और परमाणु शस्त्रागार की सुरक्षा को लेकर चिंतित है।

भारत की परमाणु निवारण नीति की वैश्विक धारणाएँ रणनीतिक चिंताओं और जिम्मेदार व्यवहार की स्वीकार्यता के संयोजन से आकार लेती हैं। जबकि भारत का एनएफयू सिद्धांत और विश्वसनीय न्यूनतम निवारक मुद्रा क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान करती है और वैश्विक अप्रसार मानदंडों के साथ संरेखित होती है, क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता और विकसित तकनीकी परिदृश्य से उत्पन्न चुनौतियों के लिए निरंतर अनुकूलन और जुड़ाव की आवश्यकता होती है।

जिम्मेदार परमाणु प्रथाओं का पालन करते हुए एक विश्वसनीय निवारक बनाए रखने की भारत की क्षमता ने इसे वैश्विक रणनीतिक मामलों में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थान दिलाया है। आगे बढ़ते हुए, अप्रसार प्रतिबद्धताओं के साथ निवारक आवश्यकताओं को संतुलित करना इस नाजुक संतुलन को बनाए रखने और दीर्घकालिक सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण होगा।

निष्कर्ष

भारत की परमाणु निरोध नीति, जो पहले उपयोग न करने (एनएफयू) सिद्धांत और विश्वसनीय न्यूनतम निरोध मुद्रा पर आधारित है, ने प्रभावी ढंग से राष्ट्रीय सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान दिया है। एक मजबूत सेकेंड-स्ट्राइक क्षमता बनाए रखकर, भारत संभावित हमलावरों को रोकता है और परमाणु वृद्धि के जोखिम को कम करता है। विश्व स्तर पर, भारत का जिम्मेदार परमाणु व्यवहार, परमाणु अप्रसार मानदंडों का पालन और प्रमुख शक्तियों के साथ रणनीतिक साझेदारी एक स्थिर और सुरक्षित परमाणु वातावरण बनाए रखने की उसकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। हालाँकि, क्षेत्रीय हथियारों की होड़ और उभरते तकनीकी खतरों जैसी चुनौतियों के लिए निरंतर अनुकूलन की आवश्यकता होती है। नीति की निरंतर प्रासंगिकता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए अप्रसार प्रतिबद्धताओं के साथ निरोध आवश्यकताओं को संतुलित करना आवश्यक होगा। कुल मिलाकर, भारत की परमाणु निवारण नीति को सकारात्मक रूप से देखा जाता है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा और व्यापक वैश्विक स्थिरता दोनों में योगदान करती है।

ग्रन्थसूची

1 पंत, एच. वी. (2005)। भारत का परमाणु सिद्धांत और कमान संरचना: भारत में नागरिक-सैन्य संबंधों के लिए निहितार्थ। सशस्त्र बल एवं समाज, 31(2), 243-264।

2. सिंह, एस. (2010). प्रथम प्रयोग नहीं: भारत के परमाणु सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।

3. पेरकोविच, जी. (1999)। भारत का परमाणु बम: वैश्विक प्रसार पर प्रभाव। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस.

4. राजगोपालन, आर.पी. (2003)। दूसरा प्रहार: दक्षिण एशिया में परमाणु युद्ध के बारे में तर्क। पेंगुइन बुक्स इंडिया।

5. चेंगप्पा, आर. (2000). शांति के हथियार: परमाणु शक्ति बनने की भारत की खोज की गुप्त कहानी। हार्पर कॉलिन्स भारत।

6. कोहेन, एस.पी. (1998)। भारत: उभरती शक्ति। ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस।

7. कर्नाड, बी. (2002)। परमाणु हथियार और भारतीय सुरक्षा: रणनीति की यथार्थवादी नींव। मैकमिलन इंडिया.

8. पंत, एच. वी. (2009)। अमेरिका-भारत परमाणु समझौता: नीति, प्रक्रिया और महान शक्ति राजनीति। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।